जन्म शताब्दी पुस्तकमाला-11

पात्रता विकसित करें भगवान को प्राप्त करें

(प्रवचन)

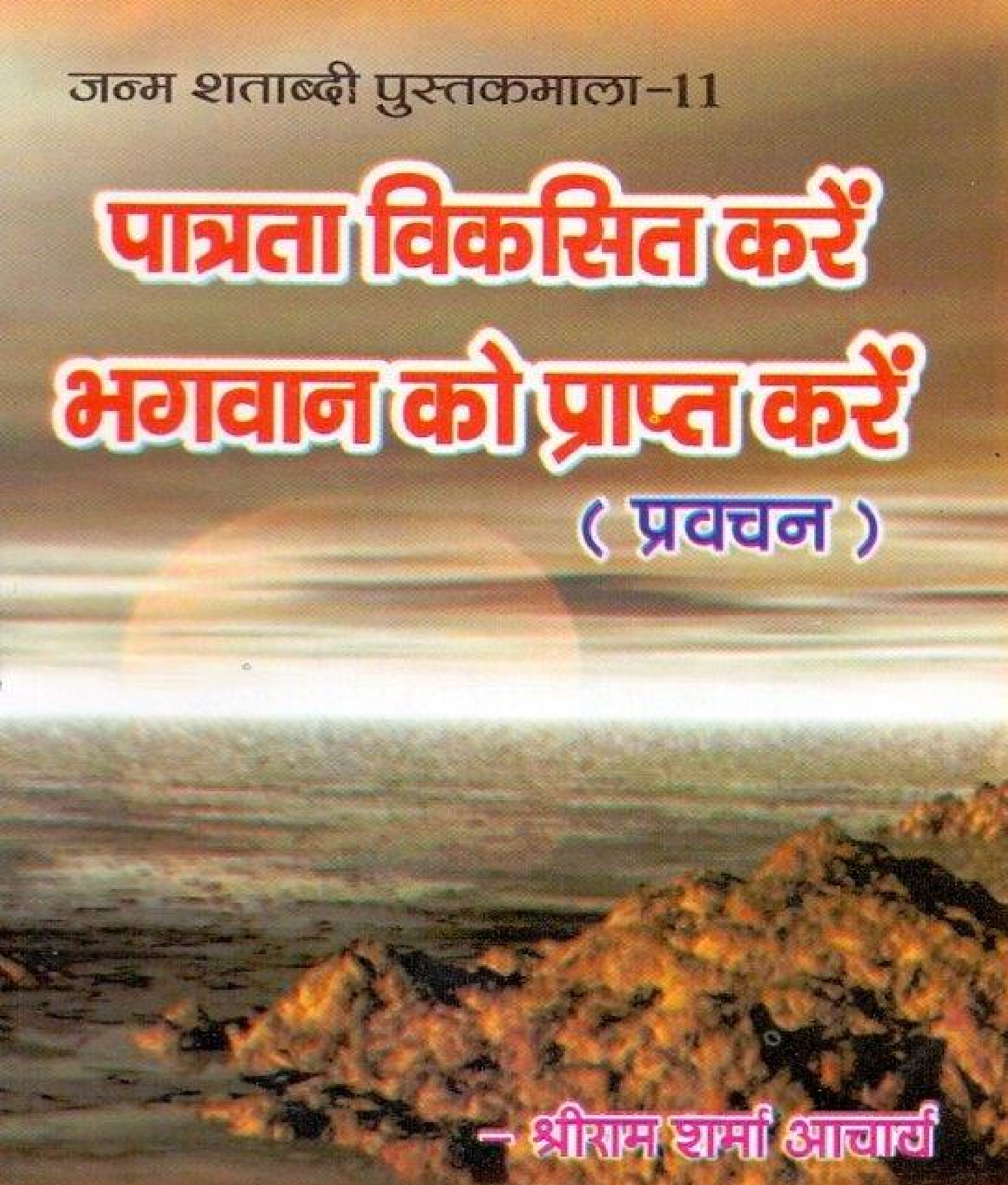

- श्रीराम शर्मा आचार्य

पात्रता विकसित करें, भगवान को प्राप्त करें

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

देवियो, भाइयो! आपने केवल अपने बेटे के लिए कमाया है, भले ही वह दो कौड़ी का हो। आपने केवल उसी के लिए जीना सीखा है। मित्रो, हमारा जीवन किस काम के लिए खरच हो गया? केवल मुट्ठी भर पत्थरों के लिए। हमने कभी भी सोचा नहीं कि हमें किस प्रकार जीना चाहिए? तो गुरुजी हमारी कमाई का क्या होगा? आपकी कमाई बेटे को मिलने वाली है, साले को मिलने वाली है, जमाई को मिलने वाली है। आपने अपनी बीबी को तबाह कर डाला। अरे आप चाहते, तो उसको

ऊँचा उठा सकते थे। भगवान ने आपको मनुष्य का शरीर दिया था। जिस दिन उसने आपको बनाया था, उसके लंबे-लंबे ख्वाब थे, उम्मीदें थीं। आपने सब पर पानी फेर दिया।

मित्रो! भगवान बहुत ज्यादा थक गया है। उसकी इच्छा है कि हमारे प्रिय बेटे मनुष्य, यदि इस दुनिया को सुंदर बनाते, तो मजा आ जाता। भगवान को सहभागी और सहयोगी की आवश्यकता थी। इसलिए भगवान ने आपको बनाया था। उसने आपको अपने नक्शे के अनुसार बड़ी मेहनत से बनाया था। भगवान के पास गीली मिट्टी थी। उसने कुम्हार के तरीके से उस मिट्टी को इस प्रकार लंबा कर दिया कि साँप बन गया। गोल-मटोल कर दिया तो कछुआ बन गया, मेंढ़क बन गए, परंतु जिस दिन भगवान ने आपको बनाया, तो उन्हें पसीना आ गया। उनका बहुत सारा समय बीत गया। इसके पीछे इस दुनिया को सुंदर बनाने

का उनका उद्देश्य था। एक-एक कण शरीर का, जिसमें मस्तिष्क, हृदय, आँखें आदि सभी अंग बने। आज तक ऐसी बेमिसाल चीज दुनिया में नहीं बनी है, जैसा कि मनुष्य का शरीर है। जब हम हिमालय गए, तो नंदन वन का फोटो खींचकर लाए। लंबाई-चौड़ाई थी, परंतु गहराई का पता नहीं लग सका तथा जो फोटो खींचा था, वह पीले रंग का आया था। उसे देखकर मैंने सोचा कि यह कैसे हो सकता है। फोटो का रंग तो इस प्रकार का नहीं होना चाहिए। वह तो मखमली था। मैंने उसे उठाकर फेंक दिया। यह सब लेन्स का कमाल था।

वरिष्ठ राजकुमार का यह व्यवहार

मित्रो, हमारी आँखें कितने सुंदर लेन्स की बनी हैं, इसका जवाब इस दुनिया में नहीं है। यह वास्तविक फोटो खींच लेती है। इतना बेशकीमती शरीर तथा भगवान का ऐसा अनुदान किसी प्राणी को नहीं मिला है। इतनी उदारता भगवान ने क्यों बरती ? यह प्रश्न आपके सामने है। आपको विचार

करना चाहिए कि भगवान ने ऐसा पक्षपात क्यों किया? अगर अन्य प्राणियों में सोचने का, विचार करने का माद्दा रहा होता, तो वे भगवान के सामने उपस्थित हो जाते तथा अपनी फरियाद सुनाकर आपको जेल भिजवा देते, परंतु उनमें यह माद्दा नहीं, अतः वे बेचारे क्या करें? परंतु आपको तो विचार करना चाहिए। इस मामले में भगवान को अगर कोर्ट में बुलाया जाता, तो वह काँपता हुआ आता। जब उससे इस बावत पूछा जाता, तो वह कहता कि मनुष्य को हमने विशेष चीजें इसलिए नहीं दीं कि वह फजूलखरची करे तथा मौज-मस्ती उड़ाए। हमने तो इस दुनिया को सुंदर बनाने के लिए, उसे सजाने-सँवारने के लिए बनाया था। यह हमारा बड़ा बेटा है, राजकुमार है। हमने इस कारण से उसे राजगद्दी दे दी थी और सारी जिम्मेदारी सौंपी थी। यह इसलिए दिया था कि वह हमारा सहयोग करेगा। हमने बहुत बड़ा ख्वाब देखा था, इसके बारे में कि यह हमारा बड़ा बच्चा

है, वरिष्ठ राजकुमार है, जो इस दुनिया को सुंदर बनाता हुआ चला जाएगा।

परंतु उस अभागे को, बेहूदे को मैं क्या कहूँ, जो घूम-घाम कर वहीं आ गया, जहाँ से चला था। वह कुत्ते की योनि से, बंदर की योनि से, सुअर की योनि से आया था और निम्नकोटि के चिंतन, विचार होने के कारण फिर से उसी योनि में चला गया। उसे निम्न कोटि के प्राणियों की तरह ही अब भी पेट तथा प्रजनन की बात याद है, बाकी चीजें तो वह भूल-सा ही गया। उस अभागे को यह समझ में नहीं आया कि जब भगवान ने बंदर के लिए, अन्य प्राणियों के लिए पेट भरने की व्यवस्था की है, तो क्या उसके प्रिय पुत्र मनुष्य को वह रोटी का प्रबंध नहीं करेगा? परंतु हाय रे! अभागे मनुष्य वह इसकी कीमत नहीं जान सका। वह अपने उद्देश्य को भूल गया तथा यह कहने लगा कि मैं अपनी अकल से कमाऊँगा, बहुत अर्जन करूँगा, मौज से रहूँगा। इसी में वह खपता रहा।

अभागे मनुष्य की दुर्गति

मित्रो! उसका हीरे एवं मोती जैसा दिमाग इसी में घूमता रहा, आगे-पीछे होता रहा, उस अभागे ने बरबाद कर लिया अपने आपको। साथियो, घोड़ा, हाथी, भैंस आदि जानवर मनुष्य से ज्यादा खाते हैं और उनका पेट भर जाता है, परंतु इस अभागे मनुष्य का पेट भाई से, बाप से, बीबी से भी नहीं भरता है। हाय रे! अभागा यह मनुष्य, पेट की खातिर बरबाद हो गया। भगवान भी मनुष्य का जन्म देकर बहुत चिंतित है कि हमने यह क्या कर डाला। मनुष्य को इतनी शक्तियाँ, विभूतियाँ देकर भेजा था लेकिन इसने सब बरबाद करके रख दिया। भगवान की इस चिंता को हमने समझा, इस पीड़ा को हमने समझा और हमने निश्चय कर लिया कि अब हम इन्हें ठीक करेंगे। मनुष्य के पास बुद्धिबल है, उसे हम ठीक करेंगे। इस दुनिया में खुशी, आनंद, उल्लास का वातावरण पैदा करेंगे। अभी तो वह पेट-प्रजनन में लगा है। मैं मनुष्य से

पूछता हूँ कि तेरे पास धर्म, संस्कृति कहाँ है? तू कभी इसके बारे में सोचता है क्या? अरे तूने इतने सारे बच्चे पैदा कर लिए? इसे नासमझी के अतिरिक्त और क्या कहा जाए?

भगवान ने इसे बहुत प्यार से पैदा किया, पाला, बड़ा किया कि शायद यह मेरे काम आएगा। मेरा सहयोगी बनेगा तथा इस संसार को सुंदर बनाएगा, परंतु इसने तो उसकी सारी की सारी इच्छाओं पर पानी फेर दिया है। यह वहीं जा पहुँचा है, जहाँ अन्य चौरासी लाख योनियों के प्राणी रहते हैं। इसने भगवान की नाक में दम कर रखा है। हमने भगवान से प्रार्थना की—हे प्रभु! इसे इस बार माफ कर दीजिए। अगर किसी को आगे इनसान बनाना, तो उसे ठोंक-बजाकर देख लेना। हमने भगवान से प्रार्थना की कि भगवान! पहले उससे पूछ लेना कि क्या उसे इनसान का जन्म चाहिए? अगर मनुष्य का जन्म चाहिए, तो दो रुपये के कागज पर हस्ताक्षर करा लेना और बता देना कि अमुक-अमुक लक्ष्य

हैं। अगर उसे मंजूर हो तो जीवन देना, वरना नहीं देना। यदि ईश्वर के लक्ष्यों को पूरा कर सको तो मनुष्य अन्यथा बंदर, कुत्ते की योनि में जाओ। तुम्हारे लिए मनुष्य का जीवन जीना तथा पाना संभव नहीं है।

जीवनक्रम बदलिए

मित्रो, यह अच्छा नहीं है। आप भगवान के बड़े बेटे हैं। आप उनके बेटे हैं, जो बड़ा उदार, दयालु, कृपा का सागर तथा सर्वसंपन्न है। भगवान अपने लिए क्या चाहता है? क्या खाता है? वह केवल दूसरों के लिए जिंदा रहता है, आपको यह सोचना चाहिए तथा अपना जीवनक्रम बदलने का प्रयास करना चाहिए। आप तो केवल लक्ष्मी का मंत्र सीखना चाहते हैं। आप कहते हैं कि गुरुजी यह क्या कह रहे हैं? मित्रो, आप चौरासी लाख योनियों का शरीर देखिए। आप अच्छे कर्म नहीं करें, तो आपको गधे की योनि स्वीकार करनी पड़ेगी। आप पर ईंट लादी जाएँगी। वजन के मारे

पीछे का पैर जख्मी हो जाएगा। पैर लड़खड़ाने लगेंगे। आप कहेंगे कि आचार्य जी हम तो मन्नूलाल सेठ हैं। हम इस योनि में कैसे जाएँगे? आपने अच्छा कर्म नहीं किया, तो आपको जाना ही होगा।

भगवान को जवाब क्या देंगे?

मित्रो! हमने शानदार जिंदगी जी है तथा प्रसन्नता के साथ विदा होने को बैठे हैं कि हम भगवान को सही उत्तर देंगे, परंतु आप भगवान को क्या जवाब देंगे। आप तो अपनी जिंदगी भर रोते रहे एवं मरने के बाद भी रोते रहेंगे। हमारा जीवन तालाब की तरह हो गया है। हमारा आधार कमजोर है। अगर अभी हमें लकवा हो जाए, तो हम कहीं के नहीं रह जाएँगे। हमारा तालाब सूख जाएगा, तो फिर क्या होगा? हमारी उन्नति का आधार समाप्त हो गया है। हमारे पास ज्ञान है, परंतु हमारे मस्तिष्क का चिंतन खराब है, तो वह किसी तरह उपयोगी नहीं है। हमारे पास संपत्ति है, परंतु कुछ उलटा हो जाए, अकाल पड़ जाए, तो हमारी सारी संपत्ति

स्वाहा हो सकती है। जिसके प्रति हमारा अहंकार है, लोभ है, मोह है, वह बेकार हो जाएगा।

तालाब के ऊपर खेती का क्या भरोसा है। खेती कुआँ के पास की, बंबे के ऊपर की ठीक होती है। जहाँ कुछ न कुछ अवश्य पैदा हो जाया करता है। वह हरा-भरा रहता है तथा पानी की चिंता उसे नहीं होती है। हमारा भी इस तरह का ही चिंतन है कि हमें भी मजबूत सहारा पकड़ना चाहिए, जिससे कि हम भी हरे-भरे रह सकें। इस तरह का सहारा हमारे लिए भगवान से बढ़कर और कोई नहीं है, जो हमें सदैव हरा-भरा रख सकता है। इसमें जिंदगी की उन्नति का सारा का सारा मार्ग खुला हुआ है। यह एक अज्ञात शक्ति है, जिसके इशारे पर सारा संसार चल रहा है।

आप तो बेटे के नशे में हैं। हाय बेटा-हाय बेटा चिल्लाते रहते हैं। एक बार हमारे पास मध्यप्रदेश के एक सज्जन आए थे। उनके दूसरे नंबर के बेटे की शादी तो हो गई, पर नौकरी नहीं

लगी थी। वह मक्कार था, श्रम करना नहीं चाहता था। उसने अपने बाप से कहा कि आपने पैदा किया है, तो खिलाइए, पैसा दीजिए, नहीं तो हम जान से मार देंगे। बेचारे डर के मारे भागकर हमारे पास आए एवं कहा कि हम दो-तीन माह तक नहीं जाएँगे। छुट्टी ले लेंगे एवं यहाँ छिपे रहेंगे। उन्होंने कहा कि गुरुजी अगर उसका कोई पत्र आ जाए, तो यह मत कहना कि हम यहाँ हैं। मित्रो, उनके मन में बेटे के प्रति जो ख्वाब था वह चूर-चूर हो गया था। आप भी बेटों के पीछे पागल रहते हैं। रात-दिन बेटा-बेटा करते रहते हैं। हमारा एक और दूसरा ख्वाब यह होता है कि हम यह बन जाएँगे, वह बन जाएँगे, परंतु एक आँधी आती है और हमारे सब ख्वाब समाप्त हो जाते हैं। हमने इतना कमजोर आधार बना दिया है कि हमें दिन में हँसना पड़ेगा तथा रात में रोना पड़ेगा। इस प्रकार हम अपनी बहिरंग जिंदगी इसी प्रकार रोते हुए खतम कर देंगे।

भगवान का सहारा लीजिए

लेकिन मित्रो! एक और सहारा है, अगर आप उसे पकड़ लेंगे, तो आपका जीवन कुछ बन सकता है। वह सहारा भगवान का है। आप कहेंगे कि हम तो रोज शंकरजी के मंदिर जाते हैं, पूजा-पाठ करते हैं, परंतु शंकरजी हमारी कोई मदद नहीं करते हैं। सावन के महीने में हमने बेलपत्र चढ़ाया, पानी का मटका लगाया, परंतु भगवान शंकर ने कोई मदद नहीं। मित्रो, शंकर भगवान की कृपा प्राप्त करने के लिए आपको बड़ा कदम उठाना होगा।

मित्रो! बड़े कार्यों के लिए बड़ा कदम, जोखिम भरा कदम उठाना पड़ता है, तब लाभ प्राप्त होता है। शंकर जी ने वरदान दिया था—रावण को, भस्मासुर को तथा शंकर जी ने वरदान दिया था परशुराम को, परंतु उनके व्यवहार एवं कर्म करने के ढंग के कारण रावण एवं भस्मासुर को मरना पड़ा। अगर आपकी विचारधारा ठीक

होगी और आप भगवान का अनुदान-वरदान प्राप्त करके इस संसार का कुछ अच्छा करना चाहते हैं, तो आपको भगवान का हर प्रकार का सहयोग मिलेगा। बल एवं धन के आधार पर मनुष्य बलवान नहीं हो सकता है। हमको अपने विकास के लिए मजबूत आधार ढूँढ़ना होगा। वह मजबूत आधार केवल भगवान है। भगवान का सहारा लेने के बाद हमारे पास क्या कमी रहेगी? हमें उनका प्यार-अनुदान प्राप्त करके अपना आध्यात्मिक विकास करने का प्रयास करना चाहिए। भगवान के पास अनंत सुख के भंडार भरे पड़े हैं। उनके एक मित्र थे सुदामा, वे गरीबी का जीवन जी रहे थे। लोगों ने कहा कि आपकी भगवान से मुलाकात है। आप इस प्रकार क्यों हैं? सुदामा जी भगवान के पास गए, भगवान ने अपने मित्र को निहाल कर दिया।

भगवान के साथ संबंध

गुरुनानक को उनके पिता ने नाराज होकर बीस रुपये व्यापार करने को दिए और कहा—जा

व्यापार द्वारा अपना जीवन निर्वाह कर। गुरुनानक देव संत थे, उन्होंने बीस रुपये की हींग खरीदी और वहाँ आए, जहाँ पर संतों का एक भंडारा चल रहा था। उस समय दाल बन रही थी। उसमें हींग का छोंक लगा दिया तथा सभी के आगे दाल परोस दी। सभी उपस्थित लोगों ने प्रेम से भोजन किया तथा प्रसन्न हुए। प्रात:काल जब नानक घर पहुँचे, तो उनके पिता काफी नाराज थे। उन्होंने पूछा कि पैसों का क्या किया? नानक जी ने सारी बात बता दी तथा यह कहा कि पिताजी! हमने ऐसा व्यापार किया है, जो भविष्य में हजार गुना होकर वापस होगा। आज वास्तव में गुरुनानक साहेब की याद में स्वर्णमंदिर अमृतसर में विद्यमान है, जो करोड़ों-अरबों का है। मित्रो, यह भगवान के साथ व्यापार करने का लाभ है। हमने विचार किया—वह कैसा मंदिर है। करोड़ों का कौन-सा मंदिर है, जिसमें गुरुनानक सोये हुए हैं। मित्रो, यह महत्त्व है भगवान के साथ जुड़ने का, उससे संबंध करने का।

मित्रो, काश्मीर में हजरत मोहम्मद साहब का पवित्र बाल एक शीशी में रखा है। जहाँ हजारों-करोड़ों की मस्जिद बनी है, जहाँ मोहम्मद साहब का बाल रखा है। अगर आज गुरुनानक देव, मोहम्मद साहब आ जाएँ तथा इतना बड़ा मूल्यवान मकान देख लें, तो उनको आश्चर्य होगा। मित्रो, यह आध्यात्मिकता का मूल्य है। भगवान से संबंध बनाने के बाद आदमी कितना मूल्यवान हो जाता है,यह विचार करने का विषय है। वह बहुत कीमती हो जाता है। नानक, विवेकानंद, मोहम्मद साहब महान हो गए। भगवान से संबंध हो जाने पर आदमी का वजन और मूल्य दोनों बढ़ जाते हैं।

अगर एक औरत की शादी एक सेठजी के साथ होती है तथा दुर्भाग्य से उसके पति का देहांत हो जाता है, तो दूसरे दिन से ही वह सेठानी, उसकी सारी जमीन-जायदाद की मालकिन बन जाती है। यही होता है—भक्त का भगवान से संबंध जोड़ने पर। डॉक्टर की पत्नी डॉक्टरनी, वकील

की पत्नी वकीलनी, पंडित की पत्नी पंडितानी बन जाती है, चाहे वह पाँचवीं क्लास ही क्यों न पास हो। जिस प्रकार धर्मपत्नी बनकर आत्मा से संबंध जोड़ने पर वह पति की सारी संपत्ति की मालकिन बन जाती है, उसी प्रकार भगवान से संबंध जोड़ने पर होता है। आपको यहाँ हमने इसलिए बुलाया है कि आपका ब्याह भगवान से करा दें। इसके लिए आपको हमने अनुष्ठान प्रारंभ कराया है। यह अनुष्ठान आपके विवाह के समय हल्दी लगाने तथा बाल सँवारने, वस्त्र आदि से सजाने के बराबर है। हम आत्मा का परमात्मा से मिलन कराना चाहते हैं। यह बाजीगरी है। हम आपका संबंध भगवान से कराना चाहते हैं, ताकि आपका संबंध मालदार आदमी से हो जाए। मालदार आदमी के साथ संबंध बना लेने से आदमी को हर समय फायदा रहता है।

भगवान की गोद में

मित्रो! मालदार आदमी के पास नौकरी करने पर पैसों के लिए चालाकी, बेईमानी करनी पड़ती

है, तो आप पैसा कमाते हैं, परंतु हम ऐसे मालदार आदमी, जिसका नाम भगवान है, उसके यहाँ आपकी नौकरी लगाना चाहते हैं, जिसके पास आपको सारी चीजें प्राप्त होती रहेंगी। उसके लिए आपको चालाकी या बेईमानी करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हम चाहते हैं कि आपको भगवान की गोद में रख दें। गोद में रहने वाला व्यक्ति घाटे में नहीं रहता है। बाप कमाता रहता है। बेटा खाता रहता है।

बेटे, हम भी आपको बाँटते रहते हैं, आशीर्वाद देते रहते हैं कि आपका कष्ट दूर हो जाए। आपकी मनोकामना पूर्ण हो जाए। आज आप कमजोर हैं, हो सकता है कि कल आप मजबूत हो जाएँ तथा भगवान का काम कर सकें। आप यह सोचते हैं कि दो साल के बाद गुरुजी चले जाएँगे तथा हमें तपोभूमि या फिर हरिद्वार जाने से क्या मिलेगा? आप इधर-उधर बगलें झाँकने लगते हैं तथा साँई बाबा के पास चले जाते

हैं। वहाँ जाने के बाद हनुमान जी के पास, करौली वाली माँ के पास जाते हैं, इधर-उधर भटकते रहते हैं। जिंदगी भर आप खाली हाथ रहते हैं। मित्रो, इधर-उधर आप भटकते न रहें, आप भगवान का पल्ला पकड़ लीजिए तथा अपने जीवन को पार कर लीजिए।

मित्रो, हमारी मुलाकात किसी एम.पी., एम.एल.ए. या मिनिस्टर से होती है या उससे जान-पहचान, साँठ-गाँठ होती है, तो हमारी समस्या तथा हमारी मुसीबतें दूर हो जाती हैं। अगर हमारा संबंध भगवान से हो तो फिर क्या कहना? मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री हमारे पास आए और यह कहा कि गुरुजी हमें एक दिन के लिए ही मुख्यमंत्री बना दीजिए। वे दो ढाई घंटे तक हमारे पास बैठे रहे। भगवान की कृपा से तुक्का लग गया और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री बन गए। मित्रो, यह क्या बात है? हमारी जान-पहचान किससे है? हमारी जान-पहचान भगवान से है।

जान-पहचान का चमत्कार

आदमी की पहचान बड़े आदमी से होने पर काम बन जाता है। एक बार ऐसा ही हुआ कि एक पंडित जी थे। पंडित जी ने एक दुकानदार के पास पाँच सौ रुपये रख दिए। उन्होंने सोचा कि जब बच्ची की शादी होगी, तो पैसा ले लेंगे। थोड़े दिनों के बाद जब बच्ची सयानी हो गई, तो पंडित जी उस दुकानदार के पास गए। उसने नकार दिया कि आपने कब हमें पैसा दिया था। उसने पंडित जी से कहा कि क्या हमने कुछ लिखकर दिया है। पंडित जी इस हरकत से परेशान हो गए और चिंता में डूब गए। थोड़े दिन के बाद उन्हें याद आया कि क्यों न राजा से इस बारे में शिकायत कर दें ताकि वे कुछ फैसला कर दें एवं मेरा पैसा कन्या के विवाह के लिए मिल जाए। वे राजा के पास पहुँचे तथा अपनी फरियाद सुनाई। राजा ने कहा—कल हमारी सवारी निकलेगी, तुम उस लालाजी की दुकान के पास खड़े रहना। राजा की सवारी निकली।

सभी लोगों ने फूलमालाएँ पहनाईं, किसी ने आरती उतारी। पंडित जी लालाजी की दुकान के पास खड़े थे। राजा ने कहा—गुरुजी आप यहाँ कैसे, आप तो हमारे गुरु हैं? आइए इस बग्घी में बैठ जाइए। लालाजी यह सब देख रहे थे। उन्होंने आरती उतारी, सवारी आगे बढ़ गई। थोड़ी दूर चलने के बाद राजा ने पंडित जी को उतार दिया और कहा कि पंडित जी हमने आपका काम कर दिया। अब आगे आपका भाग्य।

उधर लालाजी यह सब देखकर हैरान थे कि पंडित जी की तो राजा से अच्छी साँठ-गाँठ है। कहीं वे हमारा कबाड़ा न करा दें। लालाजी ने अपने मुनीम को पंडित जी को ढूँढ़कर लाने को कहा। पंडित जी एक पेड़ के नीचे बैठकर कुछ विचार कर रहे थे। मुनीम जी आदर के साथ उन्हें अपने साथ ले गए। लालाजी ने प्रणाम किया और बोले—पंडितजी हमने काफी श्रम किया तथा पुराने खाते को देखा, तो पाया कि हमारे खाते में आपका

पाँच सौ रुपये जमा है। पंडित जी दस साल में मय ब्याज के बारह हजार रुपये हो गए। पंडित जी आपकी बेटी हमारी बेटी है। अतः एक हजार रुपये आप हमारी तरफ से ले जाइए तथा उसे लड़की की शादी में लगा देना। इस प्रकार लालाजी ने पंडित जी को तेरह हजार रुपए देकर प्रेम के साथ विदा किया।

मित्रो, यह हम क्या कह रहे थे? यह बतला रहे थे कि आप भी अगर इस दुनिया के राजा, जिसका नाम भगवान है अगर अपना संबंध उससे जोड़ लें तो आपकी कोई समस्या, कठिनाई नहीं रहेगी। आपको कोई तंग भी नहीं करेगा। आपके साथ अन्याय भी कोई नहीं कर सकता। पाँच फुट वाला आदमी जब भगवान से जुड़ गया, तो मित्रो, वही आदमी महात्मा बन गया। उस आदमी का नाम महात्मा गांधी हो गया, जिसको देखकर अँगरेज डरते थे और यह कहते थे कि यह जादूगर है। इससे बचकर रहो। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री उससे

डरते थे और यह कहते थे कि यह 'बम' है। उनने अपने सभी मंत्रियों से गांधीजी से नजर न मिलाने की हिदायत दे रखी थी। वह काला गाँधी नहीं, वरन वह गांधी था, जो भगवान से जुड़ गया था और वह उसी का चमत्कर था। वह चालाकी या अकल वाला गांधी नहीं था, बल्कि भगवान का सहयोगी गांधी था। इन शक्तियों को आप भी भगवान के पास बैठकर पा सकते हैं। अपने को महान बना सकते हैं। अगर आप अपने आपको तैयार कर लें, तो सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं तथा संत, महामानव स्तर तक पहुँच सकते हैं।

अनुकंपा की अनुभूति

मित्रो, सूर्य की रोशनी इस धरती पर पड़ती तो है, परंतु है यह हमारी आँखों का चमत्कार। अगर आँखें न रहतीं, तो हम यह विभिन्न तरह के रंग कैसे देखते तथा आनंद अनुभव कैसे करते? आँख का सूर्य अगर ठीक हो तो यह आपको रामायण, भागवत पढ़ा सकता है। बगीचों का आनंद

आपको मिल सकता है। अगर आपको बुखार आ जाए तथा तबियत खराब हो जाए, तो आप ठीक से नहीं खा सकते हैं। यह बात आपको सोचनी चाहिए। एक महिला थी उसके मरने का समय हो गया। उसे पकौड़ी, नीबू का अचार, रबड़ी दी गई, परंतु उसका मुँह कड़ुवा था। उसे सब चीजें मिट्टी के समान लगीं। अगर आपकी अकल खराब हो जाए तो इस दुनिया की सारी संपत्ति आपको किसी काम की नहीं दिखाई पड़ेगी। यह क्या है ? जिसके कारण आप दुनिया के सारे आनंद ले रहे हैं ? चौरासी लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ राजकुमार की तरह रह रहे हैं। यह है भगवान की अनुकंपा, भगवान की कृपा, जो निरंतर आपके ऊपर बरस रही है। हमें यह महसूस करना चाहिए कि भगवान हमारे सारे अंग-अंग में, सारे रोम-रोम में समाया हुआ है तथा उसकी शक्ति हमारे अंदर समायी हुई है। वह हमें महान बना रहा है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ा रहा है। हमारा कायाकल्प कर

रहा है। अगर इतना आप कर सकें, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप धन्य हो जाएँगे।

साथियो! हमारी काया के भीतर ऐसे सेल्स भरे पड़े हैं, जिसमें हीरे-मोती, सोना-जवाहरात भरे पड़े हैं। अगर आप उसे जगा लें, तो मालामाल हो सकते हैं। आप पारस, कल्पवृक्ष हो सकते हैं। आपका संपर्क जिस किसी से होगा, उसको आप धन्य करते चले जाएँगे। आपका विकास होता चला जाएगा। हमें अपनी हर अँगुली प्यारी है। भगवान को भी हर प्राणी प्यारा है। वह सबका बराबर ध्यान रखता है। भगवान अपने हर अंग को सुंदर और सुडौल देखना चाहता है। भगवान के ऊपर पक्षपात का दोष नहीं लगाया जा सकता है। वह सबको बराबर देता है, परंतु मनुष्य अपने गुण, कर्म, स्वभाव, श्रम, आलस्य के कारण पिछड़ जाता है। अगर आपकी पात्रता हो, तो आप सारी चीजें प्राप्त कर सकते हैं। आप अपनी प्रगति के लिए न जाने कहाँ-कहाँ घूमते हैं, किस-किस को गुरु

बनाते फिरते हैं। हम भी १३ से १५ वर्ष की उम्र तक इसी चक्कर में पड़े रहे तथा तमाशा देखते रहे। हमने भी बहुत पैसा फेंका है, मात्र यह बाजीगरी देखने के लिए।

नकली व असली गुरु

मित्रो! इन दो सालों में हमने हिंदुस्तान के किसी भी सिद्ध पुरुष, महात्मा, योगी को नहीं छोड़ा, जो आज बाजीगर की तरह नाम बतलाते हैं तथा सोना बनाते हैं। अगर आप चाहें, तो हम उनका नाम आपको बतला सकते हैं। एक बार हमने एक सिद्ध पुरुष की बात सुनी तथा उसके लिए हमने बहुत बड़ा जोखिम उठाया, प्राणों की बाजी लगा दी। वो सिद्ध पुरुष घने जंगल की एक गुफा में रहते थे। लोगों ने बतलाया कि वे सबका नाम-पता तथा भूत-भविष्य, वर्तमान सब कुछ बता देते हैं। हम पहुँच गए उनके पास। बाबा ने सब बतलाया। हमें दाल में कुछ काला नजर आया। हम वहीं रुक गए तथा पैर में मोच का बहाना बना दिया। यह बात उनके चेले

को बता दी और एक कोने में पड़े रहे। एक दिन एक अध्यापक आया। हमने उसे बतला दिया कि यह बेकार आदमी है। इसके चेले धंधा करते हैं। हमने अध्यापक से कहा कि आप सब नाम-पते आदि गलत-सलत बताना। उसने चेलों से अपना नाम-पता सब गलत बतला दिया। दूसरे दिन महात्माजी मिले, तो उन्होंने भी वैसा ही बतलाया। अध्यापक तथा हम दोनों यह सब देखकर मुस्करा पड़े। यह उन चेलों ने देख लिया था। हमने किसी प्रकार धोती-कुरता समेटा और तोलिया लपेटकर दीर्घशंका का बहाना बनाकर वहाँ से भाग लिए। जाना था पूरब की ओर और पश्चिम की ओर निकल गए। किसी तरह प्राण बचाकर तीन दिन तक जंगल में भटकने के बाद अपने स्थान पर पहुँचे।

साथियो! हमने उस गुरु को भी देखा है, जो पंद्रह वर्ष की उम्र पूरी होने पर वसंत पंचमी के दिन हमारे पास आया था। उसने हमारे तीन जन्मों का दृश्य हमें दिखाया और हमें गायत्री उपासना में

लगाया, जिसे हमने चौबीस साल तक विधि-विधान पूर्वक किया। हमने अपने गुरुदेव से एक प्रश्न पूछा कि पूज्यवर हमारी एक शंका है। आप बतलाएँ कि गुरुओं की खोज में लोग छुट्टी लेते हैं, मेडीकल लीव लेते हैं, घर-बार छोड़ते हैं, तब जाकर शायद किसी कोने में कोई सच्चा गुरु मिलता है, परंतु आप तो स्वयं हमारे पास चले आए, यह क्या बात है? पूज्यवर ने बतलाया—बेटे! धरती क्या बादलों के पास जाती है या बादल स्वयं आते हैं धरती पर? हमने कहा बादल स्वयं आते हैं एवं धरती पर बरस जाते हैं। बादलों को चलना पड़ता है। बादल स्वयं बरसते रहते हैं। उन्होंने कहा कि आकाश में बादलों की तरह सिद्ध पुरुषों की भी कमी नहीं है, जो बादलों की तरह बरसने के लिए सुपात्र की खोज करते रहते हैं। दिव्य आत्माओं की वे तलाश करते रहते हैं।

मित्रो! आपने देखा होगा कि जब इस धरती पर मरी हुई लाश, कुत्ते आदि पड़े रहते हैं, तो गीध,

कौवे, चील स्वयं आ जाते हैं तथा उसे नोच-नोच कर खा जाते हैं। उसी प्रकार भगवान, दिव्य पुरुष, संत भी ऊपर से तलाश करते हैं कि इस धरती पर कौन दिव्य पुरुष है, जिसे भगवान, गुरु, संत की कृपा, वरदान, आशीर्वाद की आवश्यकता है और वह वहाँ पर पहुँच कर सारा काम करते हैं। वे देखते हैं कि कौन दया के पात्र हैं। हम बदरीनाथ, रामेश्वर जाते हैं, किंतु वे भी हमारे पास आते हैं एवं हमारी परख करके चले जाते हैं। केवट की भक्ति, श्रद्धा महान थी, उसे देखकर भगवान राम स्वयं उसके पास आये और दर्शन दिया। केवट रामचंद्र जी के पास नहीं गया था। शबरी के पास रामचंद्र स्वयं आए थे। शबरी नहीं गई थी। श्रीकृष्ण गोपियों के पास गए थे तथा उन्हें प्यार दिया था, गोपियाँ नहीं गईं थी। मित्रो! उसी प्रकार पात्रता देखकर गुरु शिष्य के पास आता है तथा उसे धन्य कर जाता है। अगर वास्तव में पात्रता हो, तो ऋद्धि-सिद्धियाँ पाई जा सकती हैं तथा निहाल हुआ जा सकता है।

पात्रता ही है महान तत्त्व

भगवान के यहाँ अनंत वैभव, कृपा, अनुदान भरा पड़ा है। वह केवल ऐसे आदमी को मिलता है, जिसकी पात्रता है। एक बार हम पोरबंदर-गुजरात गए थे और वहाँ गांधीजी का जन्म स्थान देखा था। वह बहुत छोटा था। तब वहाँ छोटा सा मकान था, परंतु भगवान तो मालदार हैं। उसने गांधीजी को धन्य कर दिया। आज वहाँ करोड़ों का स्मारक बना हुआ है। भगवान आते हैं, तो मनुष्य के सोचने का, विचार करने का, कार्य करने का ढंग बदल जाता है। उसकी आवाज बदल जाती है। उसे सारे लोगों के प्रति श्रद्धा-निष्ठा हो जाती है। वह दूसरों को प्यार देता है, दूसरों के दुःखों को देखकर द्रवित होता है। गांधी जी के अंदर भगवान आए और जो भी आवाज उनने दी, उसे पूरा होते देखा गया। भगवान की खुशामद करने से कोई काम नहीं चलेगा। पात्रता ही महान तत्त्व है। जिसमें पात्रता होती है, सरकार उसे फिर बुला लेती है। उसको काम देती है।

मित्रो! प्रतिभाओं की माँग, योग्यता की माँग, गुणों की माँग हर जगह होती है। हमारा भी यही उद्देश्य है कि आप आगे बढ़ें। हम चाहते हैं कि आपके अंदर भी वे चीजें आ जाएँ, भगवान आ जाएँ तथा आपका विकास हो जाए। इसीलिए हमने आपका ब्याह भगवान से कराने का निश्चय किया है, परंतु मित्रो, अगर कन्या अस्वस्थ हो, बीमार हो, कमजोर हो, तो उसका विवाह अच्छे लड़के के साथ कैसे हो सकता है। उसी तरह आपकी पात्रता कमजोर हो, तो भगवान कैसे आपको अपनाएगा? कैसे स्नेह, प्यार देगा? अगर राजकुमार से विवाह करना हो, तो लड़की भी ठीक होनी चाहिए। अगर आप कोढ़ी हैं, तो अच्छी लड़की आपको नहीं मिलेगी। आप अपाहिज हैं, तो भगवान के साथ विवाह नहीं कर सकते हैं। स्वस्थ, निरोग शरीर, स्वच्छ-पवित्र मन की आवश्यकता है—भगवान से विवाह करने के लिए।

भगवान से विवाह

स्वच्छ मन, स्वस्थ-निरोग शरीर बनाने के लिए आपको यहाँ बुलाया गया है, ताकि आप भगवान से जुड़ सकें। आपको हम गायत्री महापुरश्चरण करा रहे हैं। हमें प्रसन्नता है कि आप बहुत प्रातःकाल ही उठकर पूजा, ध्यान, जप, प्राणायाम में लग जाते हैं। यह सब देखकर हमें खुशी होती है। अगर आप इन करने वाले कर्मकांडों से कुछ प्रेरणा ले सकें तथा अपनी पात्रता का विकास कर सकें, अपने को जीवंत बना सकें, तो आप यकीन रखें कि आपका विवाह भगवान से हो जाएगा तथा आपके पास सारी ऋद्धि-सिद्धियाँ, वैभव स्वतः आ जाएँगे, जिनके लिए आप रातोंदिन परेशान रहते हैं।

मित्रो! एक लड़की थी। उसका रिश्ता तय हो गया। उसकी गोद में एक नारियल भी लड़के वालों ने दे दिया था। बाद में लड़के वालों ने मना कर दिया। लड़की ने कमर कसी और लाठी लेकर

उस गाँव में पहुँच गई। उसने कहा कि अरे विवाह कर,नहीं तो लाठी के सामने आ जा। मामला पंचायत तक पहुँचा। लड़की ने कहा कि इसने ही शादी पक्की की, नारियल भी दिया और अब ना कर रहा है। पंचायत ने फैसला किया कि विवाह इसी लड़की के साथ होगा।

मित्रो! हमने भी आपका विवाह भगवान से कराने का निश्चय किया है। आप भी उस लड़की की तरह दृढ़ निश्चय करके अपनी पात्रता को विकसित करके भगवान को प्राप्त करें। आपकी परेशानी दूर हो जाएगी। भगवान के पास ढेरों हीरे की अँगूठी, जवाहरात, बाल-बच्चे हैं, जिसे चाहे उठाकर ले आओ। मित्रो! यह विवाह किसी प्रकार घाटे का सौदा नहीं है। आप इसे निभाना। इसमें हमें प्रसन्नता होगी।

❐❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)